पाठ 6. दो बैलों की कथा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में समस्या के समाधान की क्षमता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता विकसित कर सकें। मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित यह कहानी दो बैलों के इर्द-गिर्द घूमती है। उनके माध्यम से लेखक जीवन जीने के ढंग और विपरीत परिस्थितियों से निबटने की प्रेरणा देना चाह रहे हैं।

पाठ का सार

झूरी के पास हीरा और मोती नामक दो बैल थे। दोनों बैल अपने मालिक से बहुत प्यार करते थे। एक बार झूरी की पत्नी का भाई, गया, उन दोनों को अपने घर ले गया मगर वे जैसे-तैसे वहाँ से भागकर वापस आ गए। गया फिर से उन्हें अपने साथ ले गया तथा उनसे सख्त काम लेना शुरू कर दिया। वे दोनों फिर से वहाँ से भागे मगर रास्ते में उन्हें काँजीहौसवालों ने कैद कर लिया। उन्होंने अपनी सूझबूझ से वहाँ के सभी जानवरों को आज़ाद करा दिया। काँजीहौसवालों ने हीरा और मोती को नीलाम कर दिया। एक व्यापारी उन्हें खरीदकर अपने साथ ले जाने लगा। रास्ता कुछ जाना-पहचाना सा था। अत: दोनों वहाँ से भागकर झूरी के पास पहुँच गए। झूरी तथा उसकी पत्नी ने उन दोनों के माथे चूम लिए। उनका पीछा करते हुए व्यापारी जब वहाँ पहुँचा तो मोती ने उस पर वार कर दिया और उसे भगा दिया।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  मानव मूल्यों को विशेष रूप से उभारें। गाँव के दृश्य का खाका खींचते हुए पालतू जानवरों की उपयोगिता, खेती में उनका योगदान व उनके साथ आत्मीय व्यवहार की चर्चा समय-समय पर कराते रहें। पशुओं से पशुवत् व्यवहार क्यों नहीं करें, इस बात पर ज़ोर दें। कहानी को अंशों में बाँटकर पठन-पाठन करें। विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला किस प्रकार से करें, यह भी बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - संज्ञा की परिभाषा दें। जातिवाचक व व्यक्तिवाचक संज्ञा की पहचान का तरीका बतलाएँ। विशेष रूप से उल्लेख करें कि व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप नहीं बदलता जबकि जातिवाचक संज्ञा का रूप बदल सकता है।
  - वचन का संबंध संख्या से है। इसी आधार पर बच्चे एकवचन व बहुवचन शब्दों की पहचान करें।
  - मुहावरे भाषा को लच्छेदार और प्रभावी बनाते हैं, यह बताएँ। मुहावरों के अनुसार उदाहरण बतलाए जा सकते हैं।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - सब जीवों पर दया करने का भाव बच्चों में भरें।
  - वह बड़ा-सा पात्र जिसमें पालतू मवेशियों को चारा-पानी दिया जाता है, 'नाँद' कहलाता है। पालतू बैल-गाय को जिस स्थान पर खूँटे से बाँधकर रखा जाता है, उसे 'थान' कहते हैं। आवारा जानवरों को पकड़कर म्युनिसीपैलिटी या नगर निगम वाले जहाँ रखते हैं उसे काँजीहौस कहते हैं।